International Journal of Innovations in Research
ISSN: 3048-9369 (Online)

भारतीय ज्ञान परंपरा : एक अध्ययन

जगदीश कुमार धुर्वे
शोधार्थी
डॉ. राखी सक्सेना, सह प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
केरियर महाविद्यालय (स्वशासी) भेल, भोपाल (म.प्र.) **भारत**
ईमेल आईडी: skj.dhurve88@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19236595

सारांश :– भारत में विकसित एवं भारत की भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व पटल पर सबसे प्राचीनतम एवं अत्यंत प्रभावशाली बौद्धिक परंपरा रही है, इस कारण अन्य देशों के विद्यार्थी भारत की भारतीय ज्ञान परंपरा रसास्वादन प्राप्त करने के लिए भारत की यात्राएँ करते रहें है। जिसमें प्रमुख रूप से आध्यात्मिकता, दर्शन, विज्ञान, गणित, भाषा–विज्ञान, चिकित्सा तथा सामाजिक व्यवस्था के विविध आयाम विषय सम्मिलित रहें हैं। वेद, उपनिषद, रामचरितमानस रामायण, महाभारत, अष्टाध्यायी, अर्थशास्त्र तथा आयुर्वेद जैसे गृंथ इसके प्रमुख आयाम व जिज्ञासु विषय रहें हैं। यह शोध आलेख भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल अवधारणाओं, उसकी ज्ञान–शाखाओं, उसकी वैश्विक देन तथा वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द **:** भारतीय ज्ञान परंपराएए विश्व पटल अध्ययन

प्रस्तावना :– भारतीय सभ्यता केवल भौतिक विकास पर आधारित नहीं रही, बल्कि चेतना, ज्ञान और मनुष्य के उच्चतम विकास की खोज में निरंतर अग्रसर रही है। इसी प्रक्रिया में एक समृद्ध **"ज्ञान परंपरा"** विकसित हुई, जो न केवल धार्मिक या आध्यात्मिक है बल्कि तार्किक, वैज्ञानिक और व्यवहारिक भी है। यह परंपरा **'सर्वे भवंतु सुखिनः'** और **'विश्वबंधुत्व'** जैसी उदार मान्यताओं को भी अपने भीतर समाहित करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :– भारतीय ज्ञान परंपरा के आरंभिक साक्ष्य वैदिक काल (1500 ई.पू. – 600 ई.पू.) तक पाए जाते हैं। इस काल में ज्ञान मौखिक रूप से गुरु के माध्यम से शिष्य को संप्रेषित कर संरक्षित की जाती थी, जिसे हम गुरू–शिष्य परंपरा के रूप में परिचित है। तदपश्चात् वैदिक ज्ञान उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों और स्मृतियों के माध्यम में विकसित किया गया। महाजनपद काल में तर्कशास्त्र, राजनीति, चिकित्सा और गणित जैसे विषयों का व्यवस्थित विकास हुआ। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने भारतीय ज्ञान को संगठित रूप दिया और उसे वैश्विक आयाम प्रदान किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख शाखाएँ :–

दर्शन :– भारतीय दर्शन छह आस्तिक (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत) तथा तीन नास्तिक (चार्वाक, जैन, बौद्ध) परंपराओं में विभाजित है। ये परंपराएँ जीवन, अस्तित्व, ज्ञान, तर्क, मोक्ष, नैतिकता और

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

चेतना पर गहन विमर्श प्रस्तुत करती हैं। विशेष रूप से अद्वैत वेदांत, बौद्ध मध्यमक और जैन स्याद्वाद का वैश्विक दार्शनिक विमर्श पर व्यापक प्रभाव है।

भाषा और व्याकरण :– पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' विश्व की अत्यंत उन्नत व्याकरण प्रणाली मानी जाती है। यह आधुनिक कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान और एल्गोरिदमिक संरचना का भी आधार मानी जाती है। गणित और ज्योतिष भारतीय गणितज्ञों ने शून्य (0), दशमलव प्रणाली, अनंत की अवधारणा, बीजगणित, त्रिकोणमिति और ज्यामिति के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यभट, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त आदि गणितज्ञों के कार्य आज भी प्रासंगिक हैं।

चिकित्सा और स्वास्थ्य विज्ञान :– आयुर्वेद, सिद्ध, योग और प्राकृतिक चिकित्सा भारतीय स्वास्थ्य ज्ञान परंपरा की प्रमुख शाखाएँ हैं। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में औषध–विज्ञान, शल्य–चिकित्सा और रोग–निदान के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का वर्णन मिलता है।

राजनीति और अर्थनीति :– कंनजपसलं का 'अर्थशास्त्र' शासन नीति, अर्थव्यवस्था, कूटनीति और युद्धनीति पर आज भी अद्वितीय ग्रंथ माना जाता है।

सामाजिक और नैतिक दर्शन :– धर्म, पुनर्जन्म, कर्म, अहिंसा, सत्य, दया, सेवा, और सबके कल्याण जैसे सिद्धांत भारतीय सामाजिक ज्ञान का आधार हैं।

कला, संगीत और वास्तुज्ञान :– नाट्यशास्त्र, संगीत, वास्तुशास्त्र, मंदिर निर्माण परंपरा तथा योग–संस्कृति भारतीय ज्ञान के सौंदर्यशास्त्रीय आयाम को प्रकट करते हैं।

ज्ञान–संप्रेषण की परंपरा :– भारतीय ज्ञान परंपरा की विशिष्टता इसकी दीर्घकालिक **'गुरु–शिष्य'** परंपरा में है।

इसमें – प्रत्यक्ष अनुभव (प्रत्यक्ष), तर्क (अनुमान), और प्रमाण (शास्त्र) को ही मान्य ज्ञान माना जाता था। ज्ञान का उद्देश्य केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का समग्र विकास था।

भारतीय ज्ञान परंपरा की वैश्विक देन :– भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव विश्व भर में देखा जा सकता है –

- ❖ योग और ध्यान की वैश्विक स्वीकृति
- ❖ भारतीय गणित का अरब होते हुए यूरोप तक प्रसार
- ❖ बौद्ध दर्शन का एशिया, यूरोप में व्यापक विस्तार
- ❖ व्याकरण और भाषाविज्ञान में पाणिनि का प्रयोग
- ❖ आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा की वैश्विक लोकप्रियता

यह स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल स्थानीय नहीं बल्कि वैश्विक महत्व की धरोहर है।

''समकालीन समय में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपयोगिता'

आज के तेजी से बदलते युग में भारतीय ज्ञान परंपरा नई दृष्टि प्रदान करती है :–

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

- ''योग और ध्यान'' मानसिक स्वास्थ्य के लिए विश्वसनीय साधन बन चुके हैं।
- ''आयुर्वेद और समग्र चिकित्सा'' जीवनशैली रोगों के लिए प्रभावी रूप में उभर रहे हैं।
- ''भारतीय गणित और तर्कशास्त्र'' आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक के मूल में योगदान देते हैं।
- ''पर्यावरणीय दर्शन'' प्रकृति के साथ संतुलित जीवन का मार्ग दिखाता है।
- ''नैतिक और सामाजिक मूल्य'' मानवता एवं सामाजिक स्थिरता के लिए आवश्यक हैं।

निष्कर्ष :– भारतीय ज्ञान परंपरा बहुआयामी, वैज्ञानिक, तर्कसंगत और आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत गहन है। यह न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान का आधार है, बल्कि वैश्विक बौद्धिक विरासत में भी महत्वपूर्ण योगदान करती है। समकालीन विश्व में, जहाँ मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट और नैतिक अवनति की चुनौतियाँ बढ़ रही हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षा अत्यधिक प्रासंगिक और उपयोगी सिद्ध होती है।

संदर्भ सूची :–

1. Aryabhata (499) Aryabhatiya, India: Ancient Mathematical Text.
2. Charaka, (2nd century), Charaka Samhita.
3. Kautilya, (3rd century BCE), Arthashastra.
4. Panini, (5th century BCE), Ashtadhyayi.
5. Patanjali, (2nd century BCE), Yoga Sutras.
6. Sushruta, (1st millennium BCE), Sushruta Samhita.
7. Basham, A. L. (2014), The Wonder That Was India, Picador.
8. Radhakrishnan, S. (2013), Indian Philosophy (Vol. 1–2) Oxford University Press.
9. Singh, R. (2020), Ancient Indian Knowledge Systems, New Delhi: IGNOU.
10. Sharma, R. K. (2018), Indian Scientific Heritage, New Delhi: National Book Trust.

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)